Lecture No. (01)

Name of the college A.P.S.M. College, Barauni, Begusarai, L.N.M.U. Darbhanga
Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt - A.I.H.&C
Lession/Plan for class B.A Part II (H) Paper IV
Date - 17-06-2021
Name of the Topic - स्तूप का आकार

स्तूप का अर्थ टीला के रूप में प्रयुक्त है, यानि ऊँचा टीला, जो मिट्टी से बनाया जाय। वैदिक युग में पितृमेध से इसका गहरा सम्बंध था। इस कारण अर्द्धगोलाकार टीले को स्तूप की संज्ञा दी गई है। ऊँचे चबूतरे पर स्तूप का आकार अर्द्धगोलाकार दिखलायी पड़ता है। बौद्ध युग में वैदिक परम्परा को निंदित समझ कर के स्तूप को ईंट-प्रस्तर के सहारे तैयार करने लगे। उस अर्द्धगोलाकार स्तूप के सिरे पर चौकोर घेरा तैयार दीख पड़ता है। जिसे हरमिका का नाम देते हैं। उसी में धातुगर्भ स्थित किया जाता है। उसी हरमिका के केन्द्र में छत्रयष्टि स्थिर की जाती है और यष्टि के सिरे पर तीन छत्र (एक के बाद दूसरा एवं तीसरा) निर्मित रहते हैं।

चबूतरे के ऊपरी भाग में स्तूप के चारों तरफ प्रदक्षिणा के लिए मार्ग सुरक्षित रहता है तथा किनारे पर वेदिका को स्थान दिया गया है। भिक्षुगण उस मार्ग से स्तूप की पूजा कर प्रदक्षिणा करते थे। उसे मेधी या मेध कहते हैं। ग्रामीण जनता अन्न को भूसा से पृथक करते समय बैलों को एक स्तंभ (मेढ़) के चारों तरफ घुमाती है, वही कार्य मेधी से लिया जाता है। स्तूप का आकार सर्वत्र एक सा नहीं नहीं मिलता। वैशाली का स्तूप छोटे आकार का है। जिसमें मेधी तथा हरमिका के लिए स्थान नहीं है। पीपरावा स्तूप भी उसी से मिलता जुलता है। ये स्तूप प्रारंभिक दशा को व्यक्त करते हैं। P.T.O.

जिस समय काला का स्तूप का प्रयोजन भारतीय वास्तुकला मे नई धाराएँ आई। स्तूप पूजा का पात्र बन गया। अशोक ने हजारों स्तूप निर्मित किए, किन्तु उनके वास्तविक आकार का पता नही चलता। धर्मराजिका स्तूप के भग्नावशेष मिले है।

संभवतः उनमे हर्मिका तथा छत्र का अभाव था। भगवान बुद्ध को महापुरुष मानकर कालांतर मे आकार - प्रकार जोड़े गए। साँची स्तूप की आकृति अवस्था ईंटो के रूप मे थी, जिस पर शुंगकाल मे प्रस्तर बिछाए गए। अर्धगोलाकार भाग को अंड का नाम देते है, मानो अंड पर प्रस्तर लगाया गया ताकि वह चिरस्थायी हो सके। साँची मे अशोक स्तम्भ की प्राप्ति से स्तूप की तिथि निश्चित हो जाती है। ईसा पूर्व दूसरी सदी मे शुंगराज महानुभावो मे स्तूप का विस्तार किया गया होगा, जिसके फलस्वरूप साँची का मुख्य स्तूप आज भी खड़ा है। दक्षिण भारत के स्तूपो का आकार उत्तरी भारत के स्तूपो से कुछ भिन्न दिख पड़ता है। चबूतरे तथा अंड की बनावट मे भिन्नता है, जिसका वर्णन अगले भाग मे भी कर सकते है। दक्षिण भारत मे अमरावती के अंड पर नाना प्रकार की कारीगरी दीख पड़ती है, अंड संगमरमर के पत्थर से ढका है, और प्रत्येक टुकड़े पर बौद्ध धर्म के प्रतीक या कथानकों का प्रदर्शन दृष्टिगोचर होता है।